International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 12, Dec 2024
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

मानसिक स्वास्थ्य व अध्ययन आदतों का पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

विपिन बिहारी शर्मा

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर

डॉ. प्रभा कुमारी (शोध निर्देशिका)

प्राचार्य, चौधरी जगन सिंह टी.टी. कॉलेज, तुहिया, भरतपुर

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व अध्ययन आदतों का पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। अध्ययन के परिणाम में यह पाया कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध है एवं विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध है।

मुख्य शब्दावली– मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन आदतें एवं पारिवारिक वातावरण।

प्रस्तावना

पारिवारिक वातावरण में एक परिवार विशेष की सभी परिस्थितियाँ शामिल हैं। पारिवारिक वातावरण को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में माना जाता है जहाँ परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के संबंध और कार्य एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में, पारिवारिक

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वातावरण व्यक्ति के विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्ति के जीवन के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और अन्य सभी पहलुओं में पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है अर्थात् पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ता है। विभिन्न शोध कार्यों से पता चलता है कि जो बालक एक श्रेष्ठ पारिवारिक वातावरण में रहते हैं, जहां माता–पिता बालक को जीवन के प्रत्येक पहलू में स्वतंत्रता देते हैं, चाहे वह मनोवैज्ञानिक, सामाजिक या शारीरिक हो, ऐसे बालक अपने जीवन में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। एक बालक के संपूर्ण विकास के लिए पारिवारिक वातावरण महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षा की दृष्टि से पारिवारिक वातावरण का प्रभाव बालक पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जीवन की मूल–प्रवृत्तियों की संतुष्टि और विकास घर के वातावरण में ही सम्भव है। सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक गुणों को बालक परिवार के सदस्यों एवं वातावरण के मध्य रहकर ही सीखता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को आदर्श आचरण प्रस्तुत करना चाहिये। जिससे बालक पर अच्छा प्रभाव पड़े। परिवार में रहकर ही बालक बोलना, व्यवहार करना तथा पारिवारिक रीति–रिवाज, सामाजिक परम्परा आदि के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है। नैतिक गुणों में सत्यता स्नेह, सौहार्द, सदाचार, सहयोग आदि का विकास परिवार में ही होता है। पारिवारिक वातावरण में ही मानवीय गुणों का विकास होता है। इस हेतु घर में सुव्यवस्था और अनुकूल वातावरण का होना आवश्यक है।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि परिवार का वातावरण बच्चों के व्यक्तित्व विकास की प्रथम सीढ़ी है जिसका निर्माण उसके अभिभावकों द्वारा. किया जाता है। परिवार के वातावरण में रहकर ही बच्चे को सामाजिक सम्बन्धों का ज्ञान होता है। वह वास्तविक रूप में मनुष्य बनता है। वह परोपकार, दया, त्याग, प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, ईमानदारी आदि सामाजिक गुणों को सीखता है. मानसिक गुणों का विकास भी यहीं होता है और उसके चरित्र का निर्माण भी होता है। अतः परिवार के वातावरण का स्वस्थपूर्ण स्नेहपूर्ण व सौहार्दपूर्ण होना अति आवश्यक है। परिवार में रहकर ही वे सुसंस्कृत व सुसभ्य बनते है और उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। अतः परिवार के वातावरण का किशोर के व्यक्तित्व विकास में प्रमुख योगदान हैं। किशोरों के जीवन के विभिन्न पक्षों यथा– व्यवहार, भावनाओं के प्रकटन के तरीके, कार्यकुशलता, पढ़ाई आदि में परिवार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है तथा परिवार

में भी माता–पिता की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है। परिवार का वातावरण तथा माता–पिता का कुशल निर्देशन किशोर के विकास की आधारशिला होती है। भिन्न–भिन्न वातावरण वाले परिवारों का बालक के विकास पर भिन्न–भिन्न प्रभाव पड़ता हैं।

पारिवारिक वातावरण का बालक के विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक जन्मोपरान्त जब धीरे–धीरे बाल्यावस्था की सीढ़ी पर कदम रखता है तो उसका सम्बन्ध परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बढ़ता है। यही सम्बन्ध उसके संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। पारिवारिक वातावरण में सकारात्मक माहौल जैसे– किशोरों के साथ मित्रवत सम्बन्ध, किशोरों में अपने प्रति विश्वास, किशोरों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं व उनकी आवश्यकताओं का ध्यान, किशोरों में अच्छी पुस्तक पढ़ने की ललक, माता–पिता की विद्यालय व अध्यापक के साथ सहभागिता इत्यादि का ध्यान रखा जाये ंतो किशोर विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

यदि परिवार में आपसी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण तथा समायोजित है तो बालक में भी इस प्रकार के सम्बन्ध प्रस्फुटित होते है किन्तु जब परिवार के मध्य कटुतापूर्ण सम्बन्ध होते है तो उनसे बालक का समाजीकरण तथा सामाजिक विकास भी अवरूद्ध हो जाता है साथ ही जिन परिवारों के माता–पिता, भाई–बहन और घर के अन्य सदस्य सुन्दर, शिक्षित तथा अच्छा आचरण करने वाले होते है तो उन परिवारों के बालकों का व्यक्तित्व समुचित रूप से विकसित होता है। माता–पिता की सभ्यता, सच्चरित्रता सत्यवादिता तथा ईमानदारी की झलक उनके बालकों पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। परिवार का जैसा वातावरण होता है उसी प्रकार उन परिवारों के बालकों के व्यक्तित्व का विकास होता है।

इसके विपरीत जिस परिवार के सदस्यों में परस्पर संघर्ष विनाशात्मक, आलोचना, द्वेष की भावनाएँ आदि पायी जाती है अर्थात् जिन परिवारों में पति–पत्नी, भाई–बहन, पिता–पुत्र की दुराचरण, मिथ्यावादिता, चोरी, मद्यपान आदि की आदतें होती हैं वे बालक के व्यक्तित्व विकास पर बहुत बुरा प्रभाव डालती है। प्रायः इस प्रकार के वातावरण में पले हुए बालकों में अपराध प्रवृत्तियाँ विकसित हो जाती है।

अतः परिवार ही वह संस्था है जहाँ बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव है। यदि परिवार विघटित है तो बालक का पूर्ण विकास असम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि बालक के उचित विकास हेतु पारिवारिक वातावरण सौहार्दपूर्ण तथा अनुकूल हो।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- **सोनकर, हिना (2023)** ने ''खेलों का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि स्नातक स्तर पर खिलाड़ी तथा अन्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच सार्थक अन्तर पाया जाता है, जिसमें प्रमुख आयाम, सुरक्षा–असुरक्षा तथा संवेगात्मक स्थिरता है जबकि क्षेत्र के आधार पर सर्वांगीण समायोजन और लिंग के आधार पर स्वायत्तता, सुरक्षा–असुरक्षा, स्वधारणा प्रमुख है। अतः स्पष्ट है कि मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र व लिंग के आधार पर खिलाड़ियों तथा अन्य विद्यार्थियों के बीच अन्तर रखता है। स्नातक स्तर पर खिलाड़ी तथा अन्य विद्यार्थियों के लिए धार्मिक मूल्य के बीच सार्थक अन्तर होता है। स्नातक स्तर पर खिलाड़ी तथा अन्य विद्यार्थियों के लिए सामाजिक मूल्य के बीच सार्थक अन्तर होता है। स्नातक स्तर पर खिलाड़ी तथा अन्य विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक मूल्य के बीच सार्थक अन्तर होता है।
- **गुर्जर, अंजू (2022)** ने ''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'' किया। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया है।
- **कुमार, शैलेन्द्र एवं यादव, सरोज (2020)** ने ''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों की अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। अध्ययन में निष्कर्ष पाये गये कि माध्यमिक स्तर पर विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत की विमा समझ एवं ई–संसाधनों के प्रयोग में सार्थक अन्तर है, जबकि माध्यमिक स्तर पर विभिन्न शैक्षिक समाजमितीय समूहों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत की विमा एकाग्रता, योजना, अन्तर्क्रिया, अध्ययन से सम्बन्धित वातावरण एवं अभ्यास में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध उद्देश्य

- विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबध का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।
- विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। जिसमें 200 छात्र और 200 छात्राएँ हैं।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने अपने शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया है–

- मानसिक स्वास्थ्य मापनी – अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित।
- अध्ययन आदत मापनी – एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित।

* पारिवारिक वातावरण मापनी – डॉ. हरप्रीत भाटिया एवं डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित।

सांख्यिकी तकनीक

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 – विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

तालिका : 1

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबंध

समूह	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	मानसिक स्वास्थ्य	0.71	अस्वीकृत
	पारिवारिक वातावरण		

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबंध गुणांक 0.71 प्राप्त हुआ है, जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध गुणांक है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2 – विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

तालिका : 2

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबंध

समूह	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	अध्ययन आदत	0.73	अस्वीकृत
	पारिवारिक वातावरण		

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में सहसंबंध गुणांक 0.73 प्राप्त हुआ है, जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध गुणांक है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप यह पाया कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध पाया जाता है एवं विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पारिवारिक वातावरण में सार्थक सहसंबंध पाया जाता है। इस आधार पर निम्न सुझाव दिये जाते हैं–

- अभिभावकों को परिवार का वातावरण ऐसा रखना चाहिए जहाँ बालक–बालिकाएँ स्वयं को सुरक्षित महसूस करे, अपने विचारों, भावनाओं तथा समस्याओं को खुलकर सभी के साथ बाँट सके।
- माता–पिता द्वारा परिवार में ऐसा प्रेममय तथा स्नेहपूर्ण वातावरण बनाया जाना चाहिए जिससे बालक–बालिकाओं में नकारात्मक भावों को कम किया जा सके। इससे उनके भावात्मक विकास का उन्नयन होगा तथा मानसिक स्वास्थ्य का स्तर भी बढ़ेगा।
- अभिभावकों द्वारा अपने बालक–बालिकाओं की भावनाओं तथा विचारों को समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

- अभिभावकों द्वारा बच्चों को स्वतन्त्रता तथा अनुशासन का एक सन्तुलित वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे अपने उत्तरदायित्वों को समझ सके। साथ ही परिवार में दण्ड़ तथा पुरस्कारों का भी सन्तुलन होना चाहिए।
- अभिभावकों द्वारा विद्यालय के शिक्षकों के साथ नियमित रूप से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए तथा विद्यार्थियों के समक्ष आ रही समस्याओं पर शिक्षकों के साथ विचार–विमर्श कर उन समस्याओं के समाधान खोजने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, जे.सी. (2010); ''*शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं आर्भिक आधार*''. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- ओड, एल. के. (2004); ''*शिक्षा की दार्शनिक एंव सामाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि*''. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- करलिंगर, एफ.एन. (1983); ''*फाउन्डेशन ऑफ विहेव्यरल रिसर्च*'', दिल्ली : सिरजीत पब्लिकेशन।
- कपिल, एच. के.(1995); ''*अनुसंधान विधियाँ*''. मेरठः भार्गव भवन।
- कोठारी, सी.आर. (2004); ''रिसर्च मेथडॉलॉजी''. न्यू सेज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- पाठक, आर.पी. व भारद्वाज, अमिता पाण्डेय. (2012); ''*शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी*''. नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स।
- शर्मा, आर.ए. (2006); ''*शिक्षा अनुसंधान*, मेरठः सूर्या पब्लिकेशन''. आर.लाल बुक डिपो।